प्रभु मिलन की शेष घड़ियां

- ब्र.कु.सूर्य

ब्राह्मणों का यह छोटा-सा संसार जिसे स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मा के कर कमलों के द्वारा बसाया है, आज इतनी उन्नति के शिखर पर पहुंच गया है कि विनाश के कगार पर खड़ें लोगों को विश्वास भले ही न हो कि यही हैं विश्व परिवर्तक। उन्हें हमारे प्रभु मिलन में कितनी भी शकाएं क्यों न हों, लेकिन ब्राह्मणों का एक विशाल संगठन, पवित्रता, स्नेह-सम्पन्न, सुख-शांति का स्रोत, मर्यादाओं के स्तम्भ पर टिका हमारा अलौकिक जीवन आज सबकी नजरों में आ चुका है।

प्रभु-मिलन के इस लम्बे काल में हमने हर तरह की अनुभूतियां की होंगी। बीता हुआ समय वापस तो आयेगा नहीं। जिन आत्माओं ने इस सुनहरे काल को भगवान की मर्जी से गुजारा होगा, जिन्होंने दिल से प्रभु की हर श्रीमत का स्वीकार किया होगा। जिन्होंने दिल से अपने को योग्य बनाने की मेहनत की होगी, वे इन अंतिम घड़ियों में प्रफ्फुलित होंगे। उन्हें अपने भाग्य का श्रेष्ठ नशा होगा।

बाबा ने बच्चों को वह हर राज बताया जो भविष्य सतयुगी राजधानी में भावी राजकुमारों को ज्ञात होना चाहिए। कितनी सुखद शिक्षाएं हैं बाबा की जिन्होंने सिर्फ कहा - बच्चे, श्रीमत ही तुम्हें श्रेष्ठ बनायेगी। तुम सदैव श्रीमत पर चलते रहो तो मैं तुम्हारी गारंटी ले लूंगा। कितना सस्ता सौदा किया हमसे! भोलानाथ के भोलेपन का कई फिर नजायज फायदा भी उठाने लगते हैं। बाबा बच्चों को याद दिलाते भी रहते हैं - 'मैंने तुम्हें कर्मों की इतनी गहन गति समझाई है, ड्रामा का हर राज समझाया है, तुम्हें कितना समझदार बनाया है...' क्या ये भोलापन ही है? नहीं, बच्चों के प्रति उपकार है, श्रेष्ठ भावनाएं हैं, महान् आशाएं हैं...। हाँ, हमने बाबा के दिव्य कर्त्तव्यों का रूप अवश्य ही बाप के भोलेपन में देखा होगा परन्तु शिक्षक की शिक्षाएं तो रोंगटे खड़े करने वाली है...।

बाबा की दी गई शिक्षाएं ही हमारी महानताओं का दर्पण है। परन्तु आवश्यकता है हमारे चल रहे विशाल अभियान में हम अपनी शेष घड़ियों को किस प्रकार बितायें... ये अंतिम घड़ियां बड़ी ही विचित्र होंगी... महाभारत काल में कहीं भी द्वन्द छिड़ सकता है, किसी भी द्रौपदी पर हमला हो सकता है, किसी भी अर्जुन को ममत्व आ सकता है...। तो यह समय सावधानी का समय है। ये समय समीपता के अनुभव का है। जैसा कि कुछ विशेष आत्माओं का ये पुरुषार्थ भी होगा। जो आदि से लेकर अंत तक इन प्रभुमिलन के सुखद समय को श्रीमत पर चलकर बिता गये... उनका मन संतुष्ट होगा।

हम यहां अब कुछ ऐसी अनुभूतियां प्रस्तुत करेंगे जो हमारे वर्तमान पुरुषार्थ को तीव्र रफ्तार दें। उसके लिए पहला-पहला पुरुषार्थ है - समय की पूरी-पूरी पहचान। वास्तव में समय की बलिहारी है... समय की कदर हमें आगे बढ़ना सिखाती है। उदाहरण के तौर पर हम दिनभर सेवा करें, मुरली पढ़ें व सुनें या दूसरों को ज्ञान सुनाते रहें लेकिन हम खुद अमृतवेले न उठते हों या उस समय को अपनी नींद का अच्छा समय समझते हों, विशेष आराम उसी समय मिलता हो, तो भी तो बाबा से मिलन का काल अलबेलेपन में बीत जाता है। हमें चाहिए समय की पूरी-पूरी कदर करें।

दूसरी बात - बाबा को जिन्होंने देखा है, वे जानते हैं - बाबा के अंतिम दिन कितने उपराम अवस्था के थे! उन दिनों बाबा ने विशेष तपस्या की। अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को इस यज्ञ की कारोबार में समर्पित कर दिया था। उनका न्यारा-प्यारापन उनकी महानताओं व प्रभु मिलन की गहन अनुभूतियों का साक्षात्कार कराता था...। ये अंतिम थोड़ें दिन कहीं अटक जाने व लटक जाने वाले नहीं हैं, बल्कि भटके हुए आये थे, यहां आकर भी लटक गये तो हमारी इस बुद्धिमानी पर लोग जरूर हंसेंगे।

तीसरी बात - सावधानी चाहिए। अब ऐसी विपरीत परिस्थितियां विश्व के सामने आयेंगी जिनका असर हर सामाजिक प्राणी पर होगा ही। ऐसी भौगोलिक परिस्थितियां भी होंगी जो हमारी आवश्यकताओं का दमन करेगी। इतनी भयावह स्थिति होगी मानव-मात्र की जिन्हें देख पाना साधारण मानव के बस की बात नहीं होगी। गिरावट की ओर हमारे कदम न चल पड़ें - ये संभाल चाहिए क्योंकि इन तूफानों में छोटे-मोटे पौधे तो बच भी सकते हैं पर बड़े-बड़े पेड़ अवश्य ही इनकी चोट को सहन करेंगे। ये तूफान अंतिम चेतावनी होंगे स्थिति को मजबूत बनाने के लिए।

ये तो सभी को यहां निश्चय है ही कि ये कार्य तो भगवान का है, यज्ञ भगवान ने रचा है...। भगवान पढ़ाता है - ये निश्चय भी पक्का है क्योंकि उसकी पढ़ाई प्रत्यक्ष है। परनतु पढ़ाई पर पूरा ध्यान, अंतिम समय तक ही रूहानी विद्यार्थी जीवन का पूरा रिकार्ड सर्वश्रेष्ठ हो।

हमारा बेहद का वैराग्य, अनासक्त वृत्ति, हमारी सहनशील अवस्था इस महान् कार्य को और ही सहयोग दे सकती है। ये सहयोग ईश्वरीय सहयोग दिलाने का साधन है। बाबा में ये गुण विशेष थे। हम भी उनकी औलाद हैं। उनके कदमों पर चलकर हम मेहनत से बच सकते हैं और इन सुनहरी अंतिम घड़ियों में भरपूर आनन्द ले सकते हैं।

हम जानते हैं, हमारे जीवन का पल-पल बड़ा अमूल्य है। हमने बाबा से अनेक प्रतिज्ञाएं भी की होंगी। हमें उन्हें पूरा भी करना है और उनके दिये गये अपार स्नेह का बदला भी देना है। बस, हमारा ये सुनहरा समय सोचते-सोचते ही न बीत जाये, दूसरों को देखते-देखते ही न बीत जाये। वो भी उन्हें जो अभी खुद भी पर्दे के पीछे हैं।

ये अमूल्य घड़ियां प्रभु-मिलन की - वाप समान वनने की इन सुन्दर घड़ियों को समान वनने की धुन में वितायें... ये मिलन सदाकाल की प्राप्ती का समय है। इसे विशेष वाप की शुभकामनाएं ही समझें.. कोई भी कारण हमें विचलित न कर पाये... कोई वाधा हमारे मार्ग का रोड़ा न वन जाये - कोई तूफान हमारे दीप न वुझा दे, इसका विशेष ध्यान रखें।

हमारे सुख के दिन आ रहे हैं... हमारा स्वराज्य आ रहा है...। परन्तु ये दिन, ये पल, ये क्षण, ये घड़ियां कब आयेंगी? पुन: 5000 वर्ष बाद। लेकिन जो सुख अब न ले पाये, फिर कभी नहीं ले सकेंगे - ये भी कटु सत्य है।

आओ, हम सब मिलकर इन अंतिम घड़ियों को बाबा की आशाओं को पूर्ण करने की खुशी में बितायें। कुछ दृढ़ प्रतिज्ञाएं अपने आप से कर लें कि हम अंतिम क्षण तक ईश्वरीय सेवाओं में अपना सहयोग देते रहेंगे... ये ईश्वरीय आनन्द... ये अनुपम सुख आपने जो हमें दिये, हम भी आपके सब बच्चों को देकर उन्हें भी आपके प्यार का पात्र बनायेंगे। प्रभु मिलन के सुंदर अनुभवी आत्माओं को चाहिए कि उनका सब कुछ इस यज्ञ में सफल हो। उनके श्वांस भी निष्फल न जायें... तब हम अपने अटल विश्वास की बुनियाद पर यह कह सकते हैं कि हमारी ये प्रभु मिलन की घड़ियां सफल हो रही है... परन्तु हमारी सफलता हमारे अंतिम पुरुषार्थ में बाधक न हो। अत: इन सफलताओं का भोग भी हम बाबा को लगा चुके हो।

समाज निर्माण की.... पृष्ठ 1 का शेष

संस्थान के सचिव मूलचंद लोढ़ा ने कहा कि समाज सेवा के क्षेत्र में आज भी महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रधान मंजुला देवी रोत, सहकारी बैंक की अध्यक्षा नूतन शर्मा ने कहा कि नारी दो घरों को संवारती है। वह अपनी भूमिका का बखूबी निर्वहन कर समाज को नई दिशा प्रदान करती है। ब्र.कु.सोमप्रभा ने कहा कि व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक है स्व का ज्ञान, परमात्मा का परिचय, सृष्टि चक्र के यथार्थ का ज्ञान और यह ज्ञान केवल परमात्मा ही दे सकते हैं।

स्थानीय सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु.विजयलक्ष्मी ने 'अमृत महोत्सव' मनाने जाने के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा कि परमात्मा को मानव तन में अवतरित हुए 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं तथा भगवान राजयोग की शिक्षा द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। यह ईश्वरीय संदेश घर-घर तक पहुंचा सुख, शांति, पवित्रता, आनन्द की रश्मियां बिखरने के लिए यह 'अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है। अहमदाबाद की ब्र.कु.मंजू ने सभी को राजयोग के द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। इस कार्यक्रम को ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.भूपाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम का आगाज संगीत संध्या के साथ हुआ। जिसमें विदर्भ के प्रसिद्ध गायक ब्र.कु.अविनाश, ब्र.कु.सतीश एवं ब्र.कु.नीतिन ने अपने आकर्षक गीतों की प्रस्तुति देकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के झांकियों का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वाधिक आकर्षण का मुख्य केंद्र द्वादश ज्योतिर्लिंग की झांकी रही। जिसमें भारत के विभिन्न भागों में आस्था के प्रतीक 12 ज्योतिर्लिंग वाले प्रमुख शिवालयों की स्थापना की गई। जिसमें उन मंदिरों में स्थित शिवलिंग की प्रतिमूर्ति तैयार कर आम लोगों को दर्शनों के लिए उपलब्ध कराया गया। इसी प्रकार माँ दुर्गा की चैतन्य झांकी, भविष्य का भारत - स्वर्णिम भारत, विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी और व्यसन मुक्ति के आसान तरीकों पर भी झांकी का आयोजन किया गया। इसी प्रकार ब्रह्माकुमारीज का इतिहास, सेवा एवं विस्तार पर आयोजित प्रदर्शनी में विगत 75 वर्षों की ब्रह्माकुमारीज की आध्यात्मिक विकास की यात्रा को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया।

फरीदाबाद। जर्मनी की नोर ब्रह्मसे ग्लोबल केर कम्पनी के चेयरमैन जुलिया थाईले सुराफ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.हेमलता।

हैदराबाद, शांतिसरोवर। आई.पी.एल.सीरीज के क्रिकेटरों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं दिलशन तिलकरत्ने, विनायक कुमार, वेंकेटेश प्रसाद, मंजुला तिलकरत्ने तथा अन्य।

चक्रधरपुर। परितोषिक वितरण समारोह के समूह फोटो में हैं वार्ड पार्षद मो.अशरफ, रूद्र प्रताप षड़ंगी, डॉ.शिवपूजन सिंह, ब्र.कु.प्रतिभा, ब्र.कु.उन्नति एवं स्कूल के बच्चे।

बदलापुर। पी.जी.कॉलेज में छत्राओं को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.आरती।

दिल्ली, महरौली। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़ें हैं कॉन्सलर अनिता चौधरी, पूर्व मेयर सतवीर सिंह एवं ब्र.कु.अनिता।

राजूला (गुजरात)। 'प्लीटिनम जुबली' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डिप्टी कलेक्टर, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.नीलम तथा अन्य।